शोध सारांश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय 'उत्तर पूर्व' उपन्यास का यथार्थबोध है। इसमें यथार्थबोध की अध्ययन प्रविधि को प्रस्तुत किया गया है। 'उत्तर पूर्व' उपन्यास के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत को करीब से जानने का प्रयास किया गया है।

भारत के पूर्वोत्तर में स्थित राज्य प्रकृति की सुंदरता का अपूर्व उदाहरण है। यहाँ के राज्यों की सुंदरता अद्वितीय है। इसीलिए शायद प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मणिपुर राज्य को 'भारत का स्विट्ज़रलैंड' कहा था। पूर्वोत्तर में अरुणाचल प्रदेश में सूर्य की किरण सबसे पहले पहुँचती हैं, इसीलिए इस प्रदेश को 'प्लेस ऑफ डान लिट माउनटेन' (place of Down lit-mountain) भी कहा जाता है। 'मानसेनराम' में भारत में सबसे ज़्यादा बारिश होती हैं। इसी प्रकार पूर्वोत्तर भारत की वन संपदा, पशु, पक्षी, खाद्य सामग्री आदि सभी बाकी भारतीय क्षेत्रों से अलग है। परंतु इतनी प्राकृतिक, सांस्कृतिक समृद्धि के होने के बावजूद पूर्वोत्तर भारत को कभी भी आदर एवं सम्मान की नजरों से नहीं देखा गया। यहाँ के लोग बहुत कर्मठ प्रवृत्ति के होते हैं, फिर भी इनके हितों को जानने का प्रयास न के बराबर हुआ है। यहाँ के लोगों के प्रति शेष भारत के लोगों में जो पूर्वग्रह हैं, उन्हें मिटाना ही इस लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है।

'उत्तर पूर्व' उपन्यास मणिपुर राज्य और मणिपुर विश्वविद्यालय की विभिन्न स्थितियों एवं परिवेशों से हमें अवगत कराता है। 'उत्तर पूर्व' उपन्यास में मणिपुर के मैते जाति और अन्य जनजातीय लोगों के जीवन के बारे में बताया गया है। इस कृति में उनके जीने के तौर-तरीके, बात-व्यवहार, नृत्य-संगीत, उनके स्वभाव आदि का वर्णन हुआ है। इस उपन्यास की शुरुआत में ही प्रोफेसर बर्मन देश की संरचना और उसकी अवधारणा से जूझते नजर आते हैं।

इराबो के माध्यम से मणिपुर के लोगों के अस्तित्व और अस्मिता को भारत जैसे बड़े देश में खोजने का प्रयास करते हैं। उपन्यास में मुख्य पात्र बर्मन हैं, यह मणिपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर भी है और इनके माध्यम से ही मणिपुर को समझने की प्रक्रिया शुरू होती है । बर्मन मणिपुर के लोगों, उनके समाज और संस्कृति को जानने का प्रयास करते हैं।

मणिपुर के लोग दो तरफा खूनी संघर्ष का दंश झेलते हैं। उपन्यास इस खूनी संघर्ष की गाथा को प्रस्तुत करता है जिसमें एक तरफ सरकार की सेना है जो आफ्सा (AFSPA) के कानून का मनमाना प्रयोग करते हुए आम नागरिकों को मुजरिम माने बैठी हैं, वहीं दूसरी तरफ है भूमिगत उग्रवादी संगठन, जो सरकार से बदला लेने के लिए आम जनता को लूट रहे हैं। मणिपुर की जनता दो पाटों में पिस रही हैं। फौज और उग्रवादियों की समस्या के अलावा पूरे उपन्यास में मणिपुर विश्वविद्यालय छाया रहता हैं । उपन्यास में मणिपुर विश्वविद्यालय तीन गुटों में बंटता नज़र आता हैं जिसमें मैते, ट्राइबल्स और मयांगो के अपने-अपने गुट हैं। लेकिन इन गुटों के अपवाद के रूप में बर्मन सामने आते हैं। वह किसी भी गुट के न होते हुए भी, सबके साथ एक समान व्यवहार करते हैं। उपन्यास में मणिपुर का सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष ज़्यादा उभर कर नहीं आ पाता, पूरे उपन्यास में मणिपुर विश्वविद्यालय का परिवेश ही छाया रहता है। विश्वविद्यालय का छात्र संघ चुनाव, छल-कपट, गुंड-गर्दी, विभागों के गुटों की लड़ाई आदि ही उपन्यास में झलकता है। विश्वविद्यालय के रोगग्रस्त व्यवस्था, वित्तिय कमजोरी, नैतिक ह्रास, छात्रों की उद्दंडता, राजनीतिक नियुक्तियों आदि को उपन्यास में मुख्य रूप से चिन्हित किया गया है।

उपन्यास में जगह-जगह ट्राइबल्स, मैते और मणिपुरी मुसलमानों के सांस्कृतिक-सामाजिक जीवन के बारे में बताया गया है । मैते लोग बाहरी लोगों को घर में प्रवेश नहीं देते, उनके घर में बाहरी खान-पान की कोई व्यवस्था या चलन नहीं होता है। ट्राइबल्स लोग भी अपने सामाजिक- सांस्कृतिक जीवन से बाहर नहीं आना चाहते थे, पर ईसाई धर्म के चलते उनका सामना बाहरी दुनिया से होता है। वहीं मणिपुरी मुसलमान केवल कहने के मुसलमान होते हैं, इनके यहाँ भी पर्दा जैसी प्रथा नहीं होती है। पर उपन्यास के सभी समुदाय असंतुष्ट ही नजर आते हैं। 'मुख्यधारा' वाले भारत क हिस्सा बनने के लिए छटपटाते हैं और साथ ही अपने हितों की रक्षा के प्रति सजग भी रहते हैं। बाहरी भारत के हस्तक्षेप के चलते, इनके आपस में दूरियाँ बढ़ती नजर आती हैं। उपन्यास में मणिपुर राज्य के इन मुद्दों को लेखक ज़्यादा विस्तार नहीं दे पाया है। वह विश्वविद्यालय के परिवेश में ही उलझ कर रह जाता हैं ।

मणिपुर राज्य की स्त्रियों के संघर्ष को भी उपन्यास में बताया गया है। मणिपुर औरतों के 'नूपी लान' की अपनी ही एक गाथा है। इन सभी समस्याओं के साथ तनू, तूली, कृष्णन, मुग्धा, इराबो, बर्मन, जूही, राधा आदि सभी पात्र लड़ने का प्रयास करते नजर आते हैं। मणिपुर के साथ भारत सरकार द्वारा औपनिवेशिकता जैसा व्यवहार काफी दर्दनाक है। पूरा पूर्वोत्तर भारत एक तरह से केंद्र के उपनिवेश की तरह

लगता है। 'उत्तर-पूर्व' उपन्यास हिंदी भाषा में पूर्वोत्तर भारत की स्थिति को दर्ज करता है, यह काफी साहसिक प्रयास लगता है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पूर्वोत्तर भारत के लोगों में बढ़ रहे भेदभाव और अपने ही फौजी भाइयों द्वारा अपने ही देशवासियों की रोज-रोज हत्या करना, आफ्सा कानून, मणिपुरी लोगों के दर्द आदि स्थितियों को 'उत्तर पूर्व' उपन्यास सामान्य जनता के समाने लाने में सफल हुआ है। पूर्वोत्तर भारत को भारत का हिस्सा मानने और समझने के लिए सर्वप्रथम वहाँ के लोगों को जानना आवश्यक है। अपने देश के इस हिस्से को गुमनामी से निकालने का प्रयास करना होगा। अपने देश की अखंडता को बनाए रखने के लिए और बाहरी देशों के हस्तक्षेपों को अपने देश पर से मिटाने के लिए, हमें हमारे देशवासियों को उनकी पहचान देनी होगी, सम्मान देना होगा। जो सम्मान और अपनापन बाकी भारतवासीयों को मिलता है, वही अपनापन और सम्मान पूर्वोत्तर भारत को देना होगा ताकि पूर्वोत्तर भारत के लोगों और दूसरे प्रदेश के लोगों के बीच की दूरियों को मिटाया जा सके। सभी प्रश्नो के उत्तर 'उत्तर पूर्व' जैसे उपन्यासों से ही हल हो सकते हैं।

Research Summary

The subject of the dissertation presented is the realistic understanding of the novel 'Uttar Purva'. Realistic methodology has been presented in this dissertation. Through the novel 'Uttar Purva' the effort has been made to get closer to northeast India and to learn about it.

The northeastern states of India are a rare example of nature's beauty. The beauty of northeastern states is unique. Perhaps for these reasons Prime Minister Jawaharlal Nehru called Manipur state the "Switzerland of India". Arunacahal Pradesh is called the "Place Of Dawn Lit Mountain' as the sun beams reaches first here in this northeastern state. 'Manse ram' gets the highest rainfall in India. Similarly, northeastern Indian forest, animals, birds, food, etc. is different from all the rest of the areas of India. In spite of having so much natural and cultural prosperity after this the northeastern India has never got its respect and honor. The people here are very laborious in nature but no effort has been made to know their interests. The main purpose of this dissertation is to remove these biases about the northeastern people from the people of the rest of India.

The novel 'Uttar Purva' makes us aware about the different situations and environments of Manipur state and Manipur University. In the novel 'Uttar Purva' the life of the Meite race and tribal people has been told. This work describes their way of living, talking, behavior, dance-music etc. At the beginning of the novel professor Burman is seen struggling with the concept of country and structure.

Through Irabo he tries to find the existence and identity of the people of Manipur in a big country like India. Burman is the main character of the novel and as he is also a

professor at Manipur University and through him begins the process of understanding Manipur. Burman tries to understand the people of Manipur through their society and culture. At the beginning the tragedy about the Ibohl is told, as he was arrested by the soldiers of the force without any evidence from the front of his university. Until the force realizes their mistake, Ibohl was already gone in a state of mental paralysis. He lost his exam of M.A., he was harassed very badly and eventually he becomes mentally unstable. Next, the same thing happens to another character called Irabo. Irabo studies at JNU, he thinks to make a film on the leader of the state of Manipur. But the army also takes him away without any evidence from his house and then he was beaten up. Eventually, he was also released due to lack of evidence. But Irabo does not get mentally unstable like Ibohl, on the other hand he joins hand with the militants (the underground organization of Manipur). But with them also, Irabo does not get much time to spend and he eventually returns back to the normal life. By then many years of Irabo's life got wasted. He then never gets completely healthy, and he spends his life a corpse.

The people of Manipur are facing of double-sided bloody conflict. The novel presents the story of the bloody fights, in which at one side there is the army of the Government, who arbitrary uses the AFSPA act, as they consider the civilians as the perpetrator, while on the other hand there are underground militant groups who robbed the masses to take revenge from the Government. The public of Manipur got caught between the crossfire. In addition with the problems of army and militants the shadow of Manipur University remains all over in the novel. In the whole novel there is always the discussion about the groupism between the teachers, student union elections and VC's kitchen cabinet and their conflicts. In the novel the Manipur University is seen divided into three groups in which the Meite, tribals and Myangs have their own groups. Burman arises as an exception to the groups. He

does not belong to any group, but treats everyone equally. Like the other Myangs in the novel, he never sees the people of Manipur contemptuously. And not makes distance with the Meite or tribals. He is not sneaky like other teachers. Other teacher's character in the novel are seen flattering around the VC or seen fighting between themselves. The North Indian teachers think very wrongly about the women like Juhi, whereas at the same time the Meite or the other peoples of Manipur thinks highly of Juhi. Through the increasing closeness between Juhi-Irabo, Radha and Burman the other wants to show the Manipur and North India connecting. The socio-cultural side of Manipur does not get much space because the entire novel remains shadowed by the surroundings of the Manipur University. The students union elections, fraud, hogalism, fight between the groups of departments etc. is only reflected in the novel. The ailing university system, financial weakness, moral depreciation, students in battle, political appointments, etc. has been mainly marked in the novel.

The socio-cultural life of the tribes, meite and Manipuri Muslims has been told at different places in the novel. Meite people never gives entry to outsiders in their house, there is no system or practice of outdoor eating. They do not have any habit of tea, breakfast or snacks. The tribal peoples also did not want to come out of their socio-cultural life but because of Christianity they got a chance to face the outside world. The Manipuri Muslims don't have the practice of burkha among them. But all the communities in the novel appear to be dissatisfied. They are desperate to become a part of 'Mainstream' India and at the same time they are also conscious of protecting their interests. Because of the interventions of outside India, the distance between themselves is seen increasing. The writer could not been able to give more detail to the issues of Manipur. He remains entangled in the environment of the university.

The struggle of the Manipuri women's has been also mentioned in the novel. The 'Nupi laan' of women's has its own story. With the help of Rani Gaidinlu, movement of 'Nupi laan' etc. the struggle and labour of Manipuri women's has been put in the front. She does every inside and outside chores of the house, runs the Ima market and also doesn't have any existence of its own in the form of Deven's or R.K's wife. And suffers the stinger of widowhood at the hands of her own relatives. Tanu, Tuli, Krishnan, Mugdha, Irabo, Burman, Juhi, Radha etc. all the characters strives to fight with these problems. It's quite painful to see the Indian Government behaves like a colonial Government with the Manipur. The whole north east is seems to be like a colony to the centre. This novel tries to mark the situation of the northeastern states in the Hindi language.

Based on the above analysis, it can be said that the discrimination against the people of northeast is increasing and the army is daily killing its own countrymen, AFSPA , the pain of Manipuri people etc. has been strongly put up in the novel 'Uttar Purva'. To make northeast India a part of India firstly there is a need to know and acknowledge the people of Northeast India. We must try to remove the anonymity from this part of the country. To maintain the integrity among the country and to erase the interference of foreign countries from our country, we must recognize and respect our fellow countrymen. We must give the same warmth and respect to the northeast India as is given to the rest of the India, so that the distance can be bridged between the people of north east India and other Indian states. All these questions can only be solved with the help from like the novel 'Uttar Purva'.